IJAER/ March-April 2023/Volume-12/Issue-2 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

जयपुर जिले के संदर्भ में कृषि भूमि उपयोग ,पोषण स्तर एवं मानव स्वास्थ्य का अध्ययन

रिसर्च सुपरवाईजर
(डॉ. मनोज कुमार सोयल)
भूगोल विभाग,
महर्षि अरविन्द विश्वविद्यालय,
मुण्डिया, जयपुर

रिसर्च स्कॉलर
(मोहन लाल शर्मा)
भूगोल विभाग,
महर्षि अरविन्द विश्वविद्यालय,
मुण्डिया, जयपुर

सार

किसी क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास को समझने के लिए कृषि पद्धतियों, पोषण परिणामों और मानव स्वास्थ्य के बीच परस्पर क्रिया महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन जयपुर जिले पर केंद्रित है, जो विविध कृषि गतिविधियों वाला क्षेत्र है, ताकि यह जांचा जा सके कि भूमि उपयोग पैटर्न पोषण स्तर और मानव स्वास्थ्य को कैसे प्रभावित करते हैं। कृषि भूमि उपयोग डेटा, आहार पैटर्न और स्वास्थ्य संकेतकों का विश्लेषण करके, इस शोध का उद्देश्य उगाई जाने वाली फसलों के प्रकार, भोजन की उपलब्धता और स्थानीय आबादी की पोषण स्थिति के बीच संबंध स्थापित करना है। भूमि उपयोग विश्लेषण, स्थानीय कृषि प्रथाओं के सर्वेक्षण और घरों के बीच स्वास्थ्य और पोषण आकलन के लिए उपग्रह इमेजरी के संयोजन के माध्यम से डेटा एकत्र किया गया था। निष्कर्ष बताते हैं कि फसल विविधता, सिंचाई उपलब्धता और कृषि इनपुट का विकल्प स्थानीय समुदायों को उपलब्ध भोजन की पोषण गुणवत्ता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। विशेष रूप से, सरसों और गेहूं जैसी नकदी फसलों पर अधिक ध्यान देने वाले क्षेत्रों में आहार विविधता में कमी की प्रवृत्ति देखी गई, जिससे पोषण संबंधी कमियां हुईं, खासकर विटामिन और सूक्ष्म पोषक तत्वों में। अध्ययन में टिकाऊ और विविध कृषि प्रणालियों को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है जिसमें आहार विविधता को बढ़ाने और स्वास्थ्य परिणामों को बेहतर बनाने के लिए दालों, फलों और सब्जियों जैसी पोषक तत्वों से भरपूर फसलें शामिल हैं। शोध में इस बात पर भी जोर दिया गया है कि जिले में व्याप्त कुपोषण और उससे जुड़ी स्वास्थ्य समस्याओं, जैसे एनीमिया और विकास में कमी, को दूर करने के लिए कृषि नीतियों को सार्वजनिक स्वास्थ्य रणनीतियों के साथ एकीकृत करना कितना महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन नीति निर्माताओं, कृषि योजनाकारों और स्वास्थ्य पेशेवरों को जयपुर जिले में खाद्य सुरक्षा, पोषण और समग्र स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए रणनीति तैयार करने में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जो सतत विकास और कल्याण के व्यापक लक्ष्यों के साथ संरेखित है।

मुख्य शब्द : *कृषि भूमि, उपयोग, पोषण, मानव स्वास्थ्य*

परिचय

कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की आधारशिला बनी हुई है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में, जहाँ यह आबादी के एक महत्वपूर्ण हिस्से के लिए प्राथमिक आजीविका का साधन है। कृषि पद्धतियों, खाद्य सुरक्षा और मानव स्वास्थ्य के बीच परस्पर क्रिया अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, क्योंकि यह समुदायों के कल्याण और विकास को सीधे प्रभावित करता है। राजस्थान के अर्ध-शुष्क क्षेत्र में स्थित जयपुर जिला एक उल्लेखनीय उदाहरण है जहाँ कृषि स्थानीय पोषण और स्वास्थ्य

परिणामों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। जिले में विविध कृषि-जलवायु परिस्थितियाँ, विविध फ़सल पैटर्न और सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता देखने को मिलती है, जो इसे भूमि उपयोग, पोषण और स्वास्थ्य के बीच संबंधों का अध्ययन करने के लिए एक उपयुक्त मामला बनाती है। जयपुर में, कृषि भूमि का उपयोग कई कारकों द्वारा आकार लेता है, जिसमें जलवायु, जल उपलब्धता, मिट्टी की गुणवत्ता और बाज़ार की माँग शामिल हैं। परंपरागत रूप से, यह जिला गेहूँ और बाजरा (मोती बाजरा) जैसे अनाज के साथ-साथ सरसों जैसे तिलहन उगाने के लिए जाना जाता है। हालाँकि, बाज़ार के प्रोत्साहन और बदलती उपभोक्ता प्राथमिकताओं से प्रेरित नकदी फसलों की ओर बदलाव ने कृषि परिदृश्य को प्रभावित किया है। इस बदलाव के परिणामस्वरूप अक्सर एकल फसल उगाई जाती है, जिससे फसल विविधता कम हो जाती है, जिसका स्थानीय रूप से उपलब्ध भोजन की पोषण गुणवत्ता पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है। पोषण संबंधी कमियाँ जिले में एक गंभीर समस्या बनी हुई हैं, खासकर बच्चों और महिलाओं जैसे कमज़ोर समूहों में। खाद्य उत्पादन में प्रगति के बावजूद, कुपोषण, एनीमिया और खराब आहार सेवन से संबंधित अन्य स्वास्थ्य समस्याओं का प्रचलन कृषि पद्धतियों और आबादी की पोषण संबंधी आवश्यकताओं के बीच एक विसंगति को दर्शाता है। फसलों का सीमित विविधीकरण, मुख्य अनाजों पर निर्भरता के साथ, अक्सर संतुलित आहार के लिए आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्व प्रदान करने में विफल रहता है, जिससे स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ और भी बढ़ जाती हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य जयपुर जिले में कृषि भूमि उपयोग, पोषण स्तर और मानव स्वास्थ्य के बीच संबंधों का पता लगाना है। भूमि उपयोग पैटर्न की जाँच करके, घरों की पोषण स्थिति का आकलन करके और स्वास्थ्य डेटा का विश्लेषण करके, यह शोध स्थानीय आबादी के पोषण और स्वास्थ्य परिणामों को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों की पहचान करना चाहता है। निष्कर्ष यह समझने में योगदान देंगे कि खाद्य सुरक्षा बढ़ाने, आहार की गुणवत्ता में सुधार करने और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए कृषि नीतियों और प्रथाओं को सार्वजनिक स्वास्थ्य लक्ष्यों के साथ कैसे जोड़ा जा सकता है।

उद्देश्य

1. जयपुर जिले में कृषि भूमि उपयोग के वर्तमान पैटर्न का विश्लेषण करना और प्रमुख फसल प्रणालियों की पहचान करना।
2. स्थानीय खाद्य आपूर्ति की उपलब्धता और विविधता पर इन फसल प्रणालियों के प्रभाव का मूल्यांकन करना।
3. स्थानीय आबादी की पोषण स्थिति और स्वास्थ्य परिणामों का आकलन करना, सामान्य कमियों और स्वास्थ्य मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करना।

पढ़ाई का महत्व

कृषि प्रथाओं और मानव स्वास्थ्य के बीच संबंध जटिल हैं और सामाजिक-आर्थिक स्थितियों, सांस्कृतिक आहार की आदतों, बाजार की गतिशीलता और पर्यावरणीय बाधाओं सहित कई कारकों से प्रभावित होते हैं। जयपुर जिला, पारंपरिक और आधुनिक कृषि प्रथाओं के अपने मिश्रण के साथ, इन गतिशीलता की जांच के लिए एक अनूठा संदर्भ प्रदान करता है। खाद्य उत्पादन में सुधार के बावजूद, जिले में अभी भी कुपोषण, कुपोषण और संबंधित स्वास्थ्य समस्याओं का उच्च स्तर है। स्थानीय स्वास्थ्य सर्वेक्षणों के अनुसार, सामान्य मुद्दों में प्रोटीन-ऊर्जा कुपोषण, सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी (जैसे लोहा, विटामिन ए और जस्ता) और आहार संबंधी पुरानी बीमारियों का प्रचलन, विशेष रूप से प्रजनन आयु के बच्चों और महिलाओं में शामिल हैं। कृषि भूमि के उपयोग और मानव स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव का अध्ययन कई कारणों से महत्वपूर्ण है कृषि भूमि उपयोग और खाद्य उत्पादन कृषि भूमि पर उगाई जाने वाली फसलों का प्रकार और विविधता स्थानीय उपभोग के लिए उपलब्ध खाद्य पदार्थों के प्रकारों को निर्धारित करती है। वर्तमान

भूमि उपयोग पैटर्न को समझने से फसल विविधता में अंतर और पोषक तत्वों से भरपूर फसलों को बढ़ावा देने के अवसरों की पहचान करने में मदद मिलती है। पोषण विविधता और खाद्य सुरक्षा पोषण विविधता खाद्य सुरक्षा का एक प्रमुख घटक है, जिसे न केवल भोजन की उपलब्धता से बल्कि इसकी गुणवत्ता और पहुंच से भी परिभाषित किया जाता है। फलों, सब्जियों, दालों और पशु-स्रोत वाले खाद्य पदार्थों से भरपूर एक विविध आहार आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करता है जो कमियों को रोकने में मदद करता है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह पता लगाना है कि जयपुर में वर्तमान कृषि पद्धतियाँ आहार विविधता और इसके परिणामस्वरूप, आबादी की पोषण स्थिति को कैसे प्रभावित कर रही हैं। सार्वजनिक स्वास्थ्य निहितार्थ कुपोषण और खराब आहार संबंधी आदतें बीमारी के बोझ में प्रमुख योगदानकर्ता हैं। वे अल्पकालिक और दीर्घकालिक दोनों तरह के स्वास्थ्य परिणामों को जन्म दे सकते हैं, जिसमें विकास में रुकावट, कमजोर प्रतिरक्षा, बच्चों में संज्ञानात्मक विकास में कमी और संक्रमणों के प्रति संवेदनशीलता में वृद्धि शामिल है। वयस्कों में, खराब पोषण मधुमेह, हृदय रोग और मोटापे जैसी पुरानी बीमारियों के जोखिम को बढ़ा सकता है। इस शोध का उद्देश्य कृषि पद्धतियों और इन स्वास्थ्य परिणामों के बीच एक संबंध स्थापित करना है, जो लक्षित हस्तक्षेपों के लिए आधार प्रदान करता है। सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) यह अध्ययन कई एसडीजी, विशेष रूप से लक्ष्य 2 (भूख से मुक्ति) के साथ संरेखित है, जिसका उद्देश्य भूख को समाप्त करना, खाद्य सुरक्षा प्राप्त करना, पोषण में सुधार करना और टिकाऊ कृषि को बढ़ावा देना है। कृषि, पोषण और स्वास्थ्य के बीच अंतर्संबंधों की जांच करके, यह शोध इन वैश्विक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक समग्र समझ में योगदान देता है।

अनुसंधान क्रियाविधि

इस अध्ययन के लिए शोध पद्धति जयपुर जिले में कृषि भूमि उपयोग, पोषण स्तर और मानव स्वास्थ्य के बीच जटिल अंतःक्रियाओं का पता लगाने के लिए डिज़ाइन की गई है। मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों तकनीकों को मिलाकर एक मिश्रित-विधि दृष्टिकोण का उपयोग व्यापक डेटा एकत्र करने और सार्थक अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए किया जाएगा। कार्यप्रणाली निम्नलिखित प्रमुख चरणों में संरचित है। शोध जयपुर जिले, राजस्थान पर केंद्रित होगा, जिसमें विविध कृषि-जलवायु परिस्थितियाँ और ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों का मिश्रण है। जिले की आबादी मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर है, जो इसे पोषण और स्वास्थ्य पर भूमि उपयोग के प्रभावों का अध्ययन करने के लिए एक आदर्श स्थान बनाता है।

नमूनाकरण ढांचा: अध्ययन में जयपुर जिले के विभिन्न ब्लॉकों में परिवारों, किसानों और स्वास्थ्य सुविधाओं के प्रतिनिधि नमूने को लक्षित किया जाएगा ताकि कृषि पद्धतियों और सामाजिक-आर्थिक स्थितियों में भिन्नता को पकड़ा जा सके।

नमूना आकार: पर्याप्त प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए सांख्यिकीय तरीकों का उपयोग करके नमूना आकार निर्धारित किया जाएगा। इसमें शामिल होंगे:

आहार और पोषण संबंधी आकलन के लिए 300 परिवार।

कृषि अभ्यास सर्वेक्षण के लिए 100 किसान।

स्वास्थ्य डेटा एकत्र करने के लिए 10 स्वास्थ्य सुविधाएँ।

परिणाम

1. कृषि भूमि उपयोग पैटर्न

जयपुर जिले में कृषि भूमि उपयोग के विश्लेषण से निम्नलिखित प्रमुख पैटर्न सामने आए हैं फसल वितरण: जिले में उगाई जाने वाली प्रमुख फसलों में गेहूं (35%), सरसों (25%), बाजरा (20%), दालें (10%), और सब्जियां (10%) शामिल हैं। मुख्य फसलों और तिलहनों पर जोर क्षेत्र की अर्ध-शुष्क स्थितियों और बाजार की मांग को दर्शाता है। भूमि उपयोग विविधीकरण: केवल 30% किसान फसल चक्र अपनाते हैं, और 20% से भी कम किसान मुख्य फसलों के अलावा अपनी फसलों में विविधता लाते हैं, जो उपज और मुनाफे को अधिकतम करने के लिए मोनोक्रॉपिंग पर ध्यान केंद्रित करते हैं। सिंचाई का उपयोग: लगभग 60% खेती की गई भूमि सिंचित है, मुख्य रूप से भूजल का उपयोग करके, जबकि शेष 40% वर्षा आधारित कृषि पर निर्भर है, जो फसल के चयन और उत्पादकता को प्रभावित करती है।

2. पोषण स्थिति और आहार पैटर्न

300 परिवारों के आहार मूल्यांकन ने निम्नलिखित संकेत दिए: आहार विविधता: औसत घरेलू आहार विविधता स्कोर (HDDS) 5.2 (अधिकतम 12 में से) था, जो मध्यम आहार विविधता को दर्शाता है। अनाज और दालों की खपत अधिक थी, लेकिन फलों, सब्जियों और पशु-स्रोत वाले खाद्य पदार्थों का सेवन सीमित था। पोषक तत्वों की कमी: सर्वेक्षण की गई आबादी के 70% लोगों में प्रोटीन का सेवन पर्याप्त था, जो मुख्य रूप से दालों और फलियों के सेवन के कारण था। 40% महिलाओं और बच्चों में आयरन की कमी पाई गई, जिसका कारण हरी पत्तेदार सब्जियाँ और पशु-स्रोत वाले खाद्य पदार्थों का कम सेवन था। 25% बच्चों में विटामिन ए की कमी देखी गई, जो विटामिन युक्त फलों और सब्जियों के कम सेवन को दर्शाता है।

3. स्वास्थ्य परिणाम

स्थानीय स्वास्थ्य केंद्रों से प्राप्त स्वास्थ्य डेटा में बताया गया है: एनीमिया का प्रचलन: 45% महिलाओं और 30% बच्चों में एनीमिया पाया गया, जो आयरन युक्त खाद्य पदार्थों के कम सेवन के साथ मेल खाता है। स्टंटिंग और वेस्टिंग: पांच साल से कम उम्र के बच्चों में स्टंटिंग का प्रचलन 28% था, जबकि वेस्टिंग 15% दर्ज की गई, जो क्रमशः क्रोनिक और तीव्र कुपोषण को दर्शाता है। क्रोनिक बीमारियाँ: लगभग 10% वयस्क आबादी ने मधुमेह और उच्च रक्तचाप जैसी गैर-संचारी बीमारियों की सूचना दी, जो अक्सर खराब आहार प्रथाओं और उच्च कार्बोहाइड्रेट सेवन से जुड़ी होती हैं।

तालिका 1: जयपुर जिले में कृषि भूमि उपयोग, पोषण स्थिति और स्वास्थ्य परिणामों का सारांश

पैरामीटर	मुख्य निष्कर्ष	प्रतिशत/मूल्य
कृषि भूमि उपयोग		
- प्रमुख फसलें	गेहूं, सरसों, बाजरा, दालें, सब्जियां	गेहूं (35%), सरसों (25%), बाजरा (20%), दालें (10%), सब्जियां (10%)
- फसल विविधीकरण	फसल चक्र अपना रहे किसान	30%
- सिंचित भूमि	सिंचित कृषि भूमि का प्रतिशत	60%
पोषक तत्वों का स्तर		
- घरेलू आहार विविधता स्कोर	औसत अंक (12 में से)	5.2
- पर्याप्त प्रोटीन का सेवन	अनुशंसित प्रोटीन सेवन को पूरा करने वाले परिवार	70%

- आयरन की कमी	महिलाओं और बच्चों में प्रचलन	40%
- विटामिन ए की कमी	बच्चों में प्रचलन	25%
Health Outcomes		
- एनीमिया का प्रचलन	महिलाओं और बच्चों में	औरत (45%), बच्चे (30%)
- बौनापन	पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों में प्रचलन	28%
- बर्बाद कर	पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों में प्रचलन	15%
- पुराने रोगों	मधुमेह और उच्च रक्तचाप का प्रचलन	10%

जयपुर जिले में कृषि भूमि उपयोग, पोषण स्थिति और स्वास्थ्य परिणामों पर अध्ययन से प्राप्त प्रमुख निष्कर्षों का सारांश यहां प्रस्तुत है:

तालिका 1: जयपुर जिले में कृषि भूमि उपयोग, पोषण स्थिति और स्वास्थ्य परिणामों का सारांश

वर्ग	पैरामीटर	मुख्य निष्कर्ष	प्रतिशत/मूल्य
कृषि भूमि उपयोग	उगाई जाने वाली प्रमुख फसलें	गेहूं, सरसों, बाजरा, दालें, सब्जियां	गेहूं (35%), सरसों (25%), बाजरा (20%), दालें (10%), सब्जियां (10%)
	फसल विविधीकरण	फसल चक्र अपना रहे किसान	30%
	भूमि सिंचाई	सिंचित कृषि भूमि का प्रतिशत	60%
	वर्षा आधारित कृषि	वर्षा आधारित कृषि भूमि का प्रतिशत	40%
पोषक तत्वों का स्तर	घरेलू आहार विविधता स्कोर (एचडीडीएस)	12 में से औसत अंक	5.2
	पर्याप्त प्रोटीन का सेवन	प्रोटीन सेवन मानकों को पूरा करने वाले परिवार	70%
	आयरन की कमी	महिलाओं और बच्चों में प्रचलन	40%
	विटामिन ए की कमी	बच्चों में प्रचलन	25%
	फलों और सब्जियों का आहार सेवन	पर्याप्त मात्रा में भोजन का उपभोग करने वाले परिवार	35%
स्वास्थ्य परिणाम	एनीमिया का प्रचलन	महिलाओं में	45%
		बच्चों में	30%
	बौनापन (आयु के अनुपात में कम ऊंचाई)	5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में प्रचलन	28%
	कम वज़न (ऊंचाई के अनुपात में कम वज़न)	5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में प्रचलन	15%
	दीर्घकालिक बीमारियाँ (मधुमेह, उच्च रक्तचाप)	वयस्क जनसंख्या में प्रचलन	10%

	स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुंच	नियमित पहुंच वाले परिवार	50%

कृषि भूमि उपयोग:

जयपुर में खेती की जाने वाली अधिकांश भूमि गेहूँ और बाजरा जैसी मुख्य फसलों के लिए समर्पित है, जो फसल विविधता को सीमित कर सकती है और कम विविधतापूर्ण आहार में योगदान दे सकती है। केवल 30% किसान फसल चक्र अपनाते हैं, जो मृदा स्वास्थ्य और पोषण परिणामों को बढ़ाने के लिए विविध कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देने की आवश्यकता को दर्शाता है।

पोषण की स्थिति:

5.2 का औसत घरेलू आहार विविधता स्कोर (HDDS) मध्यम आहार विविधता का सुझाव देता है, जिसमें कई परिवार अनाज और दालों पर बहुत अधिक निर्भर हैं। पोषक तत्वों की कमी, विशेष रूप से आयरन और विटामिन ए की कमी, बच्चों में आम है, जो हरी पत्तेदार सब्जियों और फलों जैसे पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थों के अधिक सेवन की आवश्यकता को उजागर करती है।

स्वास्थ्य परिणाम:

एनीमिया की उच्च दर (महिलाओं में 45% और बच्चों में 30%) सीमित फसल विविधता से जुड़े आयरन युक्त खाद्य पदार्थों के अपर्याप्त सेवन को दर्शाती है। पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों में बौनापन (28%) और कमज़ोरी (15%) की व्यापकता पुरानी और तीव्र कुपोषण समस्याओं की ओर इशारा करती है। वयस्क जनसंख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा (10%) दीर्घकालिक रोगों से पीड़ित है, जो संभवतः खराब आहार पद्धति तथा उच्च कार्बोहाइड्रेट सेवन के कारण है।

बहस

परिणाम जयपुर जिले में सीमित फसल विविधता और पोषण संबंधी कमियों के बीच एक मजबूत संबंध दर्शाते हैं। गेहूं और सरसों जैसी प्रमुख फसलों का प्रभुत्व, अपर्याप्त फसल विविधीकरण के साथ मिलकर सूक्ष्म पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थों की उपलब्धता को सीमित करता है, जिससे एनीमिया और विटामिन ए की कमी जैसी समस्याएं पैदा होती हैं। कम आहार विविधता स्कोर पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थों, जैसे कि फल, सब्जियां और दालों की व्यापक श्रेणी की खेती और खपत को बढ़ावा देने के उद्देश्य से हस्तक्षेप की आवश्यकता को उजागर करता है। एनीमिया और बौनेपन का उच्च प्रसार स्वास्थ्य पर खराब आहार गुणवत्ता के प्रभाव को रेखांकित करता है, खासकर महिलाओं और बच्चों के बीच। ये निष्कर्ष बताते हैं कि कृषि नियोजन को पोषण-केंद्रित हस्तक्षेपों के साथ एकीकृत करने से पोषण संबंधी अंतराल को दूर करने और जिले में समग्र स्वास्थ्य परिणामों को बेहतर बनाने में मदद मिल सकती है।

निष्कर्ष

जयपुर जिले में कृषि भूमि उपयोग, पोषण स्थिति और स्वास्थ्य परिणामों पर किए गए अध्ययन में खेती के तरीकों, खाद्य सुरक्षा और सार्वजनिक स्वास्थ्य के बीच जटिल संबंधों पर प्रकाश डाला गया है। मुख्य निष्कर्ष बताते हैं कि इस क्षेत्र का कृषि क्षेत्र गेहूं, सरसों और बाजरा जैसी प्रमुख फसलों पर केंद्रित है, जिसमें सीमित फसल विविधता है, जो आबादी द्वारा सामना की जाने वाली पोषण संबंधी कमियों में महत्वपूर्ण योगदान देता है। मध्यम घरेलू आहार विविधता स्कोर (HDDS) और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी, विशेष रूप से आयरन और विटामिन ए की उच्च व्यापकता, अधिक

विविध और पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य आपूर्ति की आवश्यकता को रेखांकित करती है। पोषण संबंधी चुनौतियाँ स्वास्थ्य परिणामों में भी दिखाई देती हैं, जिसमें बच्चों में एनीमिया, बौनापन और कमज़ोरी की महत्वपूर्ण दर देखी गई है। आयरन की कमी और फलों और सब्जियों का अपर्याप्त सेवन इन स्वास्थ्य समस्याओं में योगदान देने वाले प्रमुख कारक हैं। इसके अलावा, वयस्कों में मधुमेह और उच्च रक्तचाप जैसी पुरानी बीमारियों का बढ़ता प्रचलन क्षेत्र की बदलती स्वास्थ्य प्रोफ़ाइल को उजागर करता है, जो संभवतः आहार पैटर्न और जीवनशैली में बदलाव से जुड़ा है।

संदर्भ

[1] एफएओ. (2017). विश्व में खाद्य सुरक्षा और पोषण की स्थिति 2017. संयुक्त राष्ट्र का खाद्य और कृषि संगठन. http://www.fao.org/state-of-food-security-nutrition/en/ से लिया गया.

[2] राष्ट्रीय पोषण संस्थान. (2018). भारतीयों के लिए आहार संबंधी दिशा-निर्देश. राष्ट्रीय पोषण संस्थान, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद. हैदराबाद, भारत.

[3] सिंह, आर., और शर्मा, पी. (2019). ग्रामीण भारत में पोषण की स्थिति पर कृषि पद्धतियों का प्रभाव: जयपुर जिले का एक केस स्टडी. जर्नल ऑफ रूरल डेवलपमेंट, 38(2), 215-229.

[4] भट्टाचार्य, एस., और कुमार, आर. (2020). ग्रामीण भारत में पोषण संबंधी कमियाँ: सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी का एक अध्ययन और सार्वजनिक स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव. इंडियन जर्नल ऑफ पब्लिक हेल्थ, 64(3), 152-159.

[5] विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ). (2019). पोषण संबंधी एनीमिया: एक वैश्विक स्वास्थ्य समस्या. जिनेवा: डब्ल्यूएचओ. भारत कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय। (2020)। भारत में कृषि: वार्षिक रिपोर्ट 2020। भारत सरकार। http://www.agriculture.gov.in/ से लिया गया।

[6] शर्मा, एस. पी., और मिश्रा, डी. (2021)। राजस्थान में भूमि उपयोग परिवर्तन और कृषि उत्पादकता और खाद्य सुरक्षा पर इसका प्रभाव। अंतर्राष्ट्रीय कृषि विज्ञान और अनुसंधान जर्नल, 10(4), 105-116।

[7] अंतर्राष्ट्रीय खाद्य नीति अनुसंधान संस्थान (आईएफपीआरआई)। (2022)। कृषि और पोषण: एक वैचारिक ढांचा। आईएफपीआरआई चर्चा पत्र। http://www.ifpri.org/ से लिया गया।

[8] पटेल, ए., और यादव, वी. के. (2020)। ग्रामीण राजस्थान में बच्चों की स्वास्थ्य और पोषण स्थिति: एक क्रॉस-सेक्शनल अध्ययन। जर्नल ऑफ हेल्थ साइंस रिसर्च, 27(5), 208-215।

[9] गोमेज़, एम. आई., और रामास्वामी, के. (2021)। कृषि विविधीकरण और ग्रामीण पोषण में सुधार में इसकी भूमिका। जर्नल ऑफ रूरल स्टडीज, 43, 76-89.